छोटा खोजी पिल्ला

जेनेट लोरी

पांच छोटे पिल्लों ने बाड़ के नीचे एक गड्ढा खोदा और फिर वो वहां से आगे की बड़ी, विशाल दुनिया को खोजने चले.

वे घास के मैदान से होते हुए, सड़क से नीचे, पुल के ऊपर, हरी घास के पार, और पहाड़ी पर, एक के बाद एक करके चले.

और जब वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, तो उन्होंने खुद को गिना: एक, दो, तीन, चार. एक छोटा पिल्ला वहाँ नहीं था.

"अब दुनिया में वह छोटा खोजी पिल्ला कहाँ है?" उन्होंने अपना आश्चर्य व्यक्त किया. क्योंकि वह निश्चित रूप से पहाड़ी की चोटी पर नहीं था.

वह दूसरी तरफ से नीचे भी नहीं जा रहा था. नीचे जाते हुए उन्हें केवल एक रोयेंदार इल्ली दिखाई दी.

वह ऊपर भी नहीं आ रहा था. ऊपर आती हुई उन्हें केवल एक हरी छिपकली दिखाई दी.

लेकिन जब उन्होंने पहाड़ी के नीचे घास वाली जगह पर देखा, तो वह छोटा खोजी पिल्ला उन्हें वहाँ दिखाई दिया. वो इधर-उधर भाग रहा था, और अपनी नाक ज़मीन पर सटाए हुए था.

"वह क्या कर रहा है?" चारों छोटे पिल्लों ने एक दूसरे से पूछा. और फिर वे नीचे देखने गए, गोल-गोल, कूदते-फांदते. हरी घास पर पहुँचने के बाद वे वहाँ रुक गए.

"तुम यहाँ पर क्या कर रहे हो?" उन्होंने उससे पूछा.

"मुझे कुछ खुशबू आ रही है!" छोटे पिल्ले ने कहा.

फिर चारों छोटे पिल्लों ने सूँघना शुरू किया, और उन्हें भी वह खुशबू आई.

"चावल की खीर!" उन्होंने कहा.

फिर जितनी जल्दी हो सका वे घर की ओर दौड़े. पुल के ऊपर, सड़क पर, घास के मैदान से होते हुए, और बाड़ के नीचे से. और घर पर निश्चित रूप से, उनके लिए रात का खाना इंतज़ार कर रहा था, और मिठाई में चावल की खीर थी.

लेकिन उनकी माँ बहुत नाराज़ हुई. “अच्छा, तो तुम ही वो छोटे पिल्ले हो जिन्होंने बाड़ के नीचे छेद खोदा है!" माँ ने कहा. "आज रात चावल की खीर तुम्हें नहीं मिलेगी!" और फिर माँ ने उनसे सीधे बिस्तर पर जाकर सोने को कहा.

लेकिन सब के गहरी नींद में सो जाने के बाद छोटा पिल्ला घर आया. वो सारी चावल की खीर खा गया और फिर ख़ुशी-ख़ुशी बिस्तर पर जाकर लेट गया.

अगली सुबह किसी ने बाड़ के नीचे का गड्ढा भर दिया और एक साइन लगा दिया. साइन पर लिखा था:

लेकिन....

पांच छोटे पिल्लों ने बाड़ के नीचे फिर एक गड्ढा खोदा, बिल्कुल वैसे ही, और उसके बाद वो आगे की बड़ी, विशाल दुनिया में घूमने निकल पड़े.

वे घास के मैदान से होते हुए, सड़क के नीचे, पुल के ऊपर, हरी घास के पार, और पहाड़ी के ऊपर, दो-दो करके चढ़े. और जब वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, तो उन्होंने खुद को गिना: एक, दो, तीन, चार. छोटा पिल्ला फिर से गायब था.

"अब वह छोटा खोजी पिल्ला दुनिया में कहाँ है?" उन्होंने सोचा. क्योंकि वह निश्चित रूप से पहाड़ी की चोटी पर नहीं था.

वह दूसरी तरफ नीचे नहीं भी जा रहा था. नीचे जाते हुए उन्हें केवल एक बड़ी काली मकड़ी दिखाई दी.

वह इस तरफ आ भी नहीं रहा था. उन्हें सिर्फ़ एक भूरे रंग के मोटे मेंढक को आते हुए देखा.

लेकिन जब उन्होंने पहाड़ी के नीचे घास वाली जगह पर देखा, तो वहाँ वो छोटा पिल्ला एक पत्थर की तरह स्थिर बैठा था, उसका सिर एक तरफ़ था और उसके कान ऊपर की ओर थे.

चार छोटे पिल्लों ने एक दूसरे से पूछा, "वह क्या कर रहा है?" और फिर वे नीचे देखने गए, गोल-गोल, कूदते-फांदते. जब तक वे हरी घास पर नहीं पहुँचे तब तक वे रुके नहीं.

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उन्होंने पूछा.

"मुझे कुछ सुनाई दे रहा है!" छोटे पिल्ले ने कहा.

चार छोटे पिल्लों ने भी वो सुना. "चॉकलेट कस्टर्ड!" वे चिल्लाए, "कोई हमारे कटोरों में चम्मच से चॉकलेट कस्टर्ड डाल रहा है!"

और फिर वे जितनी तेज़ी से जा सकते थे, घर की ओर दौड़े. पुल के ऊपर, सड़क पर, घास के मैदान से होते हुए, और बाड़ के नीचे से. और वहाँ, निश्चित रूप से घर में उनके लिए रात का खाना तैयार था, और मिठाई में चॉकलेट कस्टर्ड था.

लेकिन उनकी माँ बहुत नाखुश थी. "अच्छा तो तुम ही वो छोटे पिल्ले हो जिन्होंने बाड़ के नीचे गड्ढा खोदा था!" माँ ने गुस्से में कहा. "आज रात तुम्हें चॉकलेट कस्टर्ड नहीं मिलेगा!" और फिर माँ ने उन्हें सीधे बिस्तर पर जाकर सोने को कहा.

लेकिन छोटा पिल्ला तब वापिस घर आया जब बाकी सब गहरी नींद में सो गए, और फिर वो सारा चॉकलेट कस्टर्ड खा गया और फिर खुश होकर बिस्तर पर जाकर लेट गया.

अगली सुबह किसी ने गड्ढे को भर दिया था और एक साइनबोर्ड लगा दिया था.

साइनबोर्ड पर लिखा था:

लेकिन. . .

उसके बावजूद, पाँच छोटे पिल्लों ने बाड़ के नीचे एक गड्ढा खोदा और फिर वे बड़ी, विशाल दुनिया में टहलने निकल पड़े.

वे घास के मैदान से होते हुए, सड़क के नीचे, पुल के ऊपर, हरी घास के पार, और पहाड़ी के ऊपर, दो-दो की कतार में गए. और जब वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, तो उन्होंने खुद को गिना: एक, दो, तीन, चार. लेकिन वो छोटा खोजी पिल्ला आज भी गायब था.

“अब वह छोटा पिल्ला भला कहाँ है?” उन्होंने सोचा. क्योंकि वह निश्चित रूप से पहाड़ी की चोटी पर नहीं था.

वह नीचे भी नहीं जा रहा था. क्योंकि उन्होंने नीचे
जाते हुए केवल एक छोटा सा घास का साँप देखा.

वह ऊपर भी नहीं चढ़ रहा था. क्योंकि ऊपर
आते हुए उन्होंने केवल एक हरा टिड्डा देखा.

लेकिन जब उन्होंने पहाड़ी के नीचे घास वाली जगह पर देखा, तो छोटा खोजी पिल्ला वहाँ था, और वो अपने सामने ज़मीन पर किसी चीज़ को बड़े ध्यान से देख रहा था.

"वह क्या कर रहा है?" चारों छोटे पिल्लों ने एक-दूसरे से पूछा. और वे नीचे देखने गए, गोल-गोल, कूदते-फांदते. जब तक वे हरी घास पर नहीं पहुँचे तब तक वे नहीं रुके.

"बताओ तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उन्होंने पूछा.

"मुझे कुछ दिख रहा है!" छोटे पिल्ले ने कहा. चारों छोटे पिल्लों ने भी देखा. वहां घास में एक पकी हुई एक लाल स्ट्रॉबेरी थी.

"स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक!" वे चिल्लाए.

फिर वे जितनी तेज़ी से जा सकते थे, अपने घर गए, पुल के ऊपर, सड़क पर, घास के मैदान से होते हुए, और बाड़ के नीचे. और वहाँ, घर पर निश्चित रूप से, उनके लिए रात का खाना इंतज़ार कर रहा था, और मिठाई में स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक था.

लेकिन उनकी माँ ने कहा: "तो तुम वही छोटे पिल्ले हो जिन्होंने फिर से बाड़ के नीचे वह गड्ढा खोदा है! आज रात के खाने में तुम्हें स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक नहीं मिलेगा!" और फिर माँ ने उन्हें सीधे बिस्तर पर जाने को कहा.

लेकिन वे चार छोटे पिल्ले तब तक इंतजार करते रहे जब तक माँ सो नहीं गई. फिर वे बाहर निकले और उन्होंने बाड़ के नीचे के गड्ढे को भर दिया, और जब वे मुड़े, तो उनकी माँ उन्हें देख रही थी.

"तुम कितने अच्छे छोटे पिल्ले हैं!" माँ ने कहा. "आओ स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक खाओ!"

और इस बार, जब छोटा पिल्ला घर आया, तो उसे बाड़ में एक अन्य चौड़ी जगह से बड़ी मुश्किल से घुसना पड़ा. और घर पर उसके चार भाई-बहन थे, जो अपनी तश्तरी से आखिरी स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक के टुकड़े चाट रहे थे.

"देखो!" उसकी माँ ने कहा. "बड़ा अफ़सोस है कि तुम इतने छोटे हो! लेकिन अब स्ट्रॉबेरी शॉर्टकेक सब खत्म हो गया है!"

इसलिए छोटे पिल्ले को शॉर्टकेक का एक भी निवाला खाए बिना बिस्तर पर जाना पड़ा, और उसे उसका बहुत अफ़सोस हुआ.

और अगली सुबह किसी ने एक साइन लगा दिया था जिस पर लिखा था: